आर एन आई नं. DELHIN/2016/68357 दुमाही बाल पत्रिका

खड़ी हुई है बस

मोहम्मद अरशद खान
चित्रः देबब्रत घोष

खड़ी हुई है बस
भरी है ठस्सम ठस
चल देगी तो आकर
और भरेंगे दस

ISSN 2456-4753

प्लूटो

अंक 1 वर्ष 7
अप्रैल - मई 2022

बकरी जब जंगल से आई
खुशखबरी भी लाई
उसके पीछे-पीछे आए
बच्चे दूध मलाई

प्रभात

मूल्य ₹ 60

चित्रः वान्या उनियाल, पहली, भोपाल

मुझे टिटहरी से एक दिन
यूँ साफ साफ है कहना
टी टी टी टी के आगे भी
अँग्रेज़ी है बहना

शिराज़ हुसैन
चित्रः भार्गवी मोहन
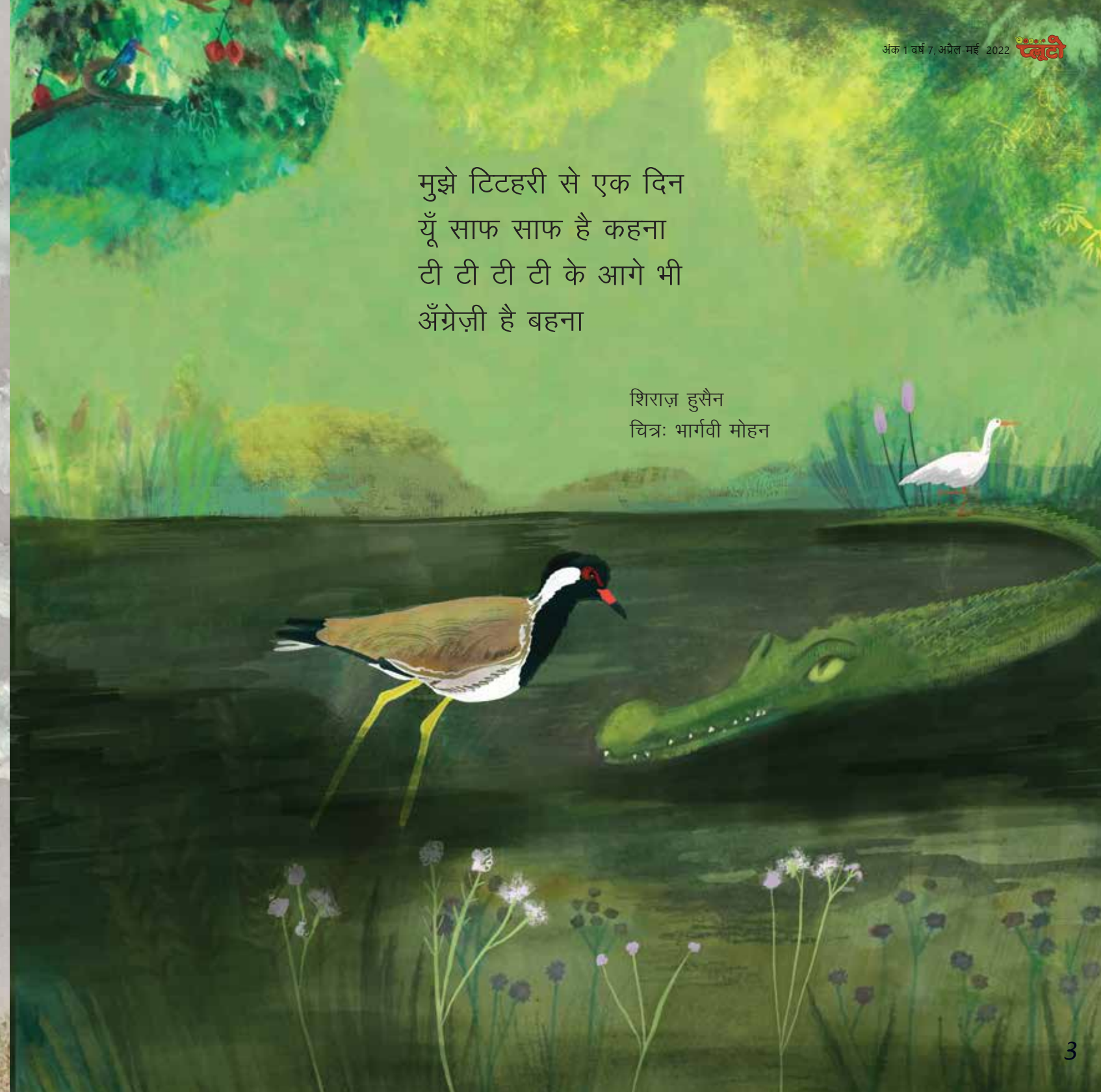
नीम और गुलमोहर

पद्मजा
चित्र: सुनीता

हमारे घर के बाहर मम्मी ने नीम लगाया था। वो रोड के दूसरी तरफ है। फिर एक साल पहले पापा ने घर के बाहर एक गुलमोहर लगाया, वो इस तरफ है। हमारे घर आने वाले लोग पहले कहते थे कि नीम कितना बड़ा हो गया है। अब लोग कहते हैं, "गुलमोहर कितना बड़ा हो गया है।" अब पापा ने अमलतास लगाया है। जब वो बड़ा हो जाएगा तो लोग कहेंगे कि अमलतास कितना बड़ा हो गया है।

एक दिन मैं अपने कमरे की बालकनी में बैठी थी। बाहर एक कुत्ता नीम की छाया में सो रहा था। मैं कॉफी लेने अन्दर गई। जब बाहर आई तो कुत्ता गुलमोहर की छाया में सो रहा था। मैंने उसे कई बार देखा।

वो दोनों पेड़ों की छाया में सो रहा था। खो रहा था। एक गाय आई। उसने नीम की शाख से पीठ से मिट्टी हटाई। फिर गुलमोहर के पास जाके पानी पिया। चींटियों ने नीम के बाहर मिट्टी में छोटे घर बनाए हैं। जिस दिन कई बकरियाँ आती हैं वे अच्छे से नीम की पत्तियाँ खाती हैं।
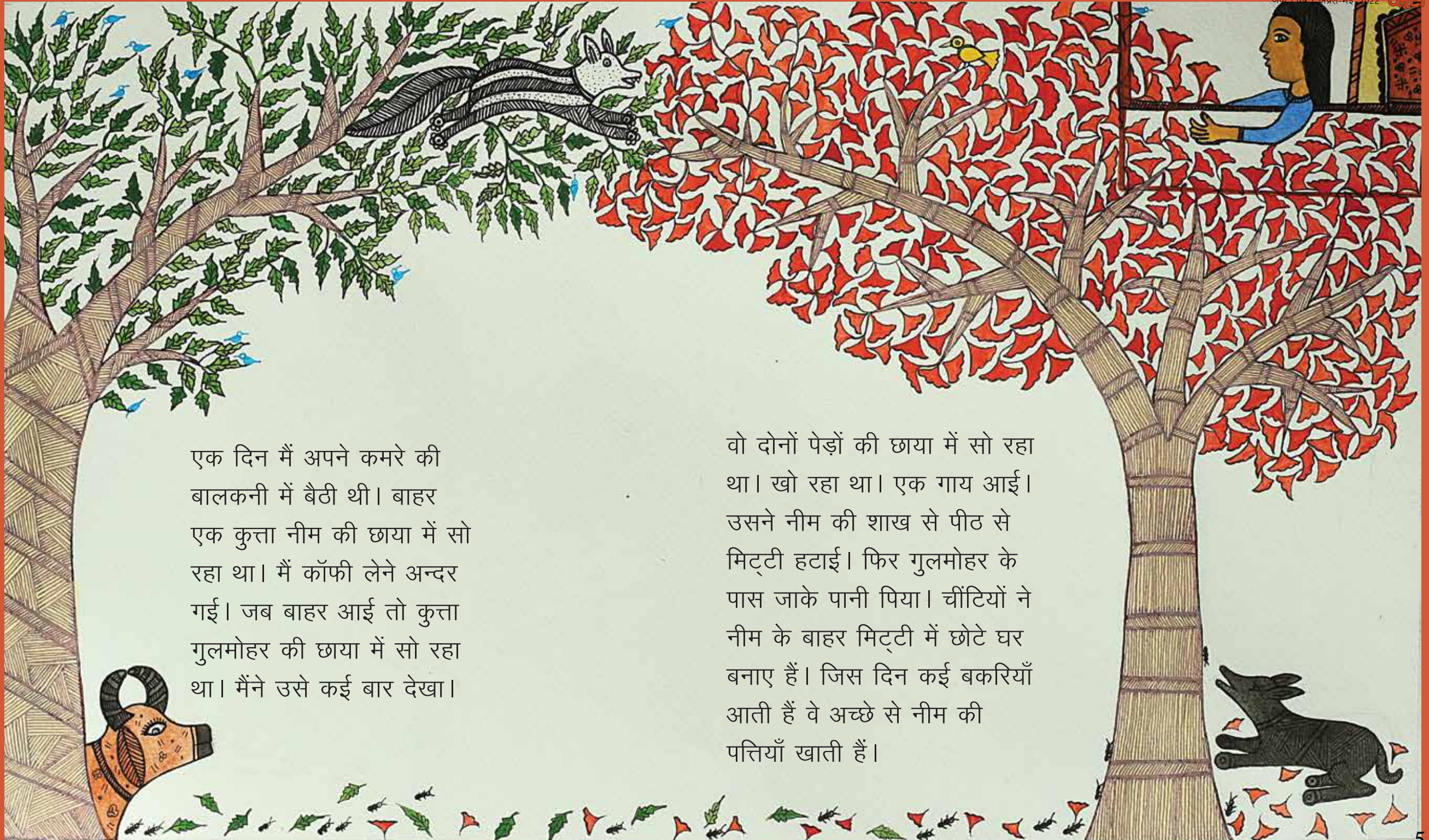
गुलमोहर के फूल पेड़ से टपक कर ज़मीन पर आ जाते हैं। बकरी गुलमोहर खा लेती है फिर चली जाती है। एक दिन मैंने गिलहरी को देखा। वो नीम पे चढ़ी, फिर नीम की टहनी पे चढ़ी। ऊपर नीम की टहनी से गुलमोहर की टहनी में गुम हुई और गुलमोहर से नीचे आ गई। लगता है नीम और गुलमोहर ने मिलके उसके लिए पुल बना दिया है। नीम के साथ में गुलमोहर के भी पत्ते मिल गए हैं। जैसे आकाश और समन्दर एक दूसरे में घुल गए हैं।

रात में रस पीने वाले पतंगे

पीयूष सेखसेरिया

फोटोः बर्नार्ड पॉन्ट

ये हैं फलों में छेद कर उसका रस पीने वाले पतंगे। यही इनका काम है। और नाम भी यही है - फ्रूट पियरसिंग मॉथ।

फोटोः विनय राज

अगर ध्यान से न देखो तो ये पतंगे नज़र ही नहीं आते। कुछ के आगे के पंख हरे होते हैं। कुछ में सूखी पत्ती के रंग के। पत्ती में पत्ती हो जाते हैं ये। पर जैसे ही कोई चिड़िया इन्हें परेशान करती है, अपने पिछले पंख झट से खोल देते हैं। और काले निशानों वाला भड़कीला सन्तरी रंग एकदम चमक उठता है। शिकारी को डराने के लिए यह काफी है।

पर कोई चिड़िया फिर भी इनके पीछे आ ही जाए तो ये सन्तरी पंख अपने हरे भूरे पंखों के नीचे छिपा लेते हैं। फिर से पत्ती में पत्ती या शाख में शाख बन जाते हैं। शिकारी चकरा जाता है। अभी तो यहीं था, गया कहाँ! किन्हीं पतंगों के पंखों पर ऐसे निशान होते हैं कि नज़र धोखा खा जाए।

फोटोः वैभव गुप्ता

पर चमगादड़ों को चकमा देना नामुमकिन है। शायद बड़े पंखों की वजह से ये उनकी नज़र से बच नहीं पाते।

मोहम्मद साजिद खान
चित्रः भार्गव कुलकर्णी

बड़ी हवेली में लटका है
एक पुराना ताला,
जंग लग गई, धूल जम गई
हुआ बहुत ही काला।

घास उगी है, दरवाज़े भी
गलकर टूट गए हैं,
साँकल की सारी कीलों के
बन्धन छूट गए हैं।

लोने से गलकर दीवारें
कब की टूट चुकी हैं,
कद्दावर वे सारी छत भी
हो कमज़ोर झुकी हैं।

चमगादड़ अब उसमें गाते
मिलकर अपना गाना,
बिल्ली बिन आहट के बुनती
सन्नाटे का ताना।

खस्ता दरवाज़े पर फैला
है मकड़ी का जाला,
पर जाने किसकी रक्षा में
लटका बूढ़ा ताला?

अंक 1 वर्ष 7, अप्रैल-मई 2022 प्लूटो
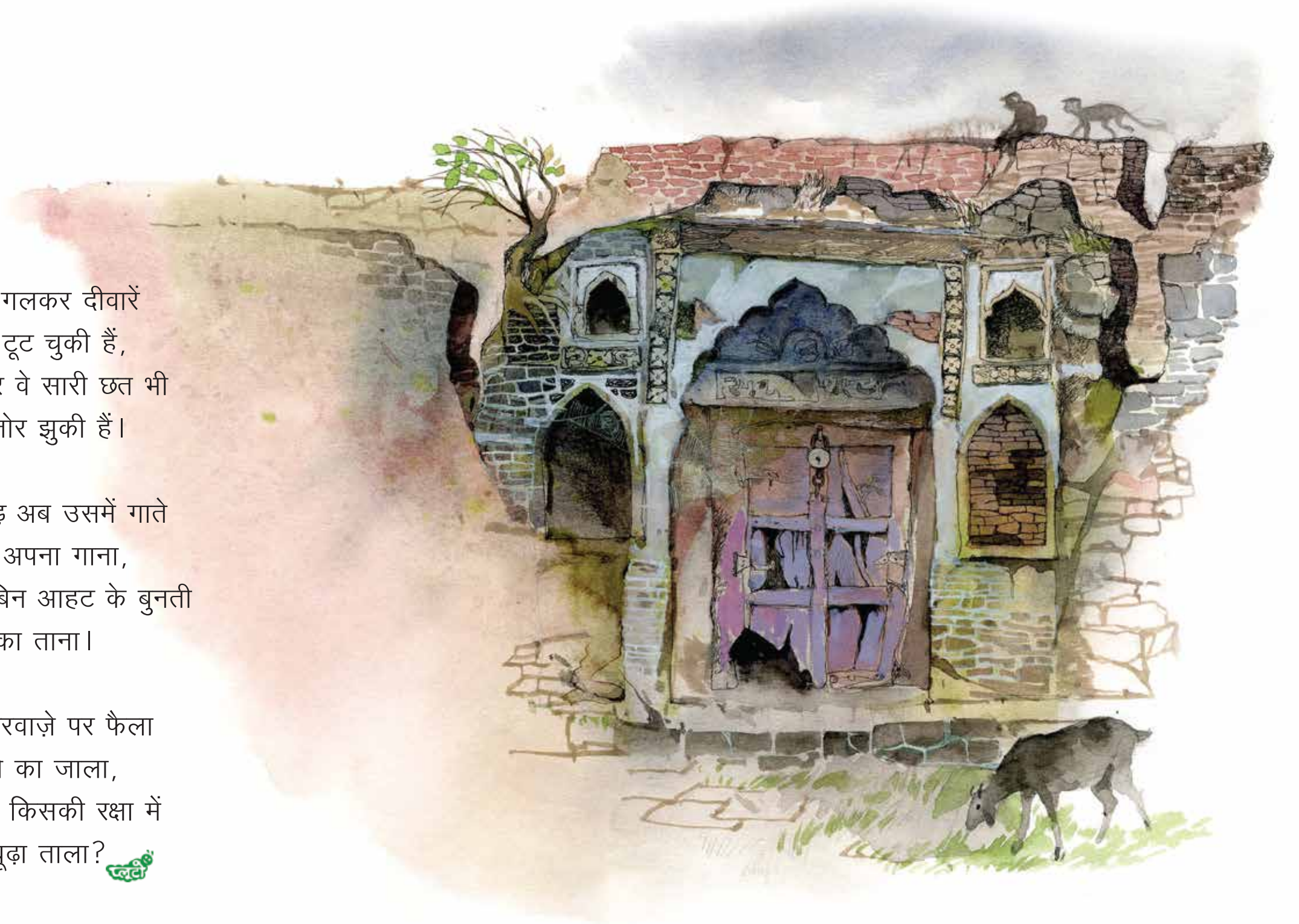
तीतर, गिलहरी और कछुए
की बातें आपस में मिल गई हैं।
किसने क्या कहा होगा?
चित्रः जिगीशा पसरीचा
मुझे पेड़ पर लुका-छिपी
खेलना पसन्द है।
क्या रेत पहाड़ के अण्डे हैं?
पहाड़ की सिर्फ पीठ कठोर होती है।
कैसे छिपाए झाड़ी, अगर पंछी हो अनाड़ी?
चील को क्या पता कि हम
भी उड़ते हैं।
छिपाकर भूल जाना
से ज़्यादा हैरानी यह
याद नहीं आना है कि
क्या छिपाया था।
सूखकर पेड़ से गिरे पत्ते
मेरे दोस्त थे।
मुझे पहुँचने में
अकसर देर हो
जाती है।
टिटहरी ही जानती होंगी कि हम
किस मुश्किल से अपने अण्डे
बचाते हैं।

केदारनाथ गुप्ता
चित्रः एलन शॉ

पापा और दीक्षा छत पर
टहल रहे थे। धूप थी।
साथ-साथ उनकी परछाई
भी टहल रही थी।

चलते-चलते परछाई
देखकर दीक्षा बोली,
“पापा सो गए। दीक्षा
भी सो गई।”

दोनों दीवार के पास पहुँचे तो
परछाई दीवार पर बनी।
दीक्षा बोली, “अब पापा उठ
गए। दीक्षा भी उठ गई।”

सपना

बिनय दास
चित्रः भार्गव कुलकर्णी

एक दिन मैंने सपना देखा। एक नदी तेज़ बह रही थी। नदी से एक मछली बाहर उछली और किनारे पहाड़ पर अटक गई। मैंने मछली को वापस पानी में डाल दिया। मछली बोली - तुम कभी मरोगे नहीं। तुम राजा बनोगे।
मैंने पूछा - सचमुच के राजा?
मछली बोली - हाँ, सचमुच के राजा। यह बोल कर मछली पानी में चली गई। और मैं नींद से बाहर आ गया।

पेड़ को धूप लगती होगी
तो वो किसकी छाँव में
बैठता होगा?
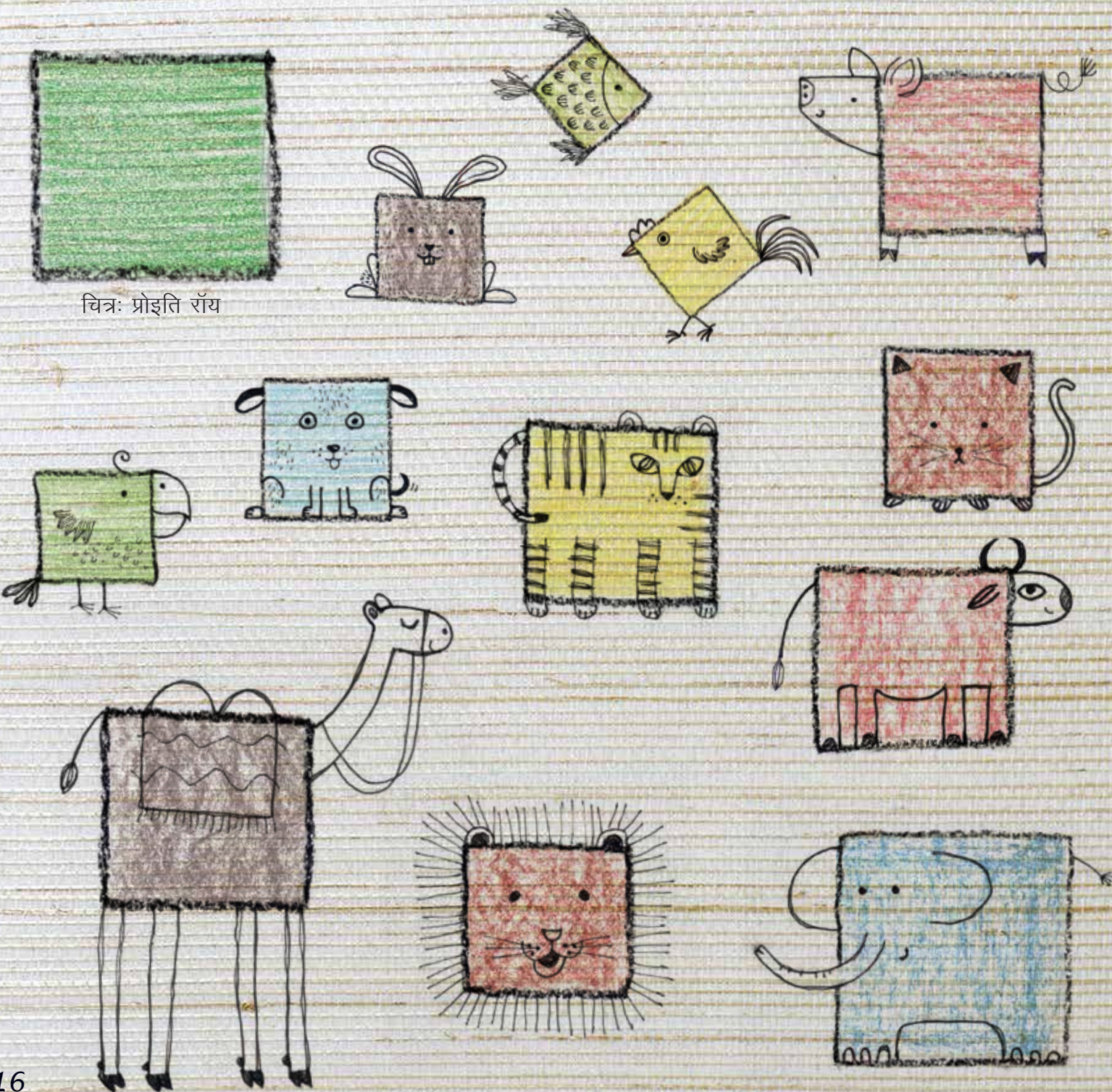
चित्रः प्रोइति रॉय

डायरी का एक पन्ना

चित्रः भार्गवी मोहन

हमारा पन्ना

माफ कीजिएगा दोस्तों कल की डायरी नहीं आई। आज भाई ने मेरी हिन्दी की कॉपी में पेन से रेखड़े मार दिए थे। मुझे बहुत गुस्सा आया। इतना गुस्सा कि मेरा मुँह लाल हो गया।

मैं लाल पीला होने लगा। अगर आप मेरी जगह होते तो आपको भी बहुत गुस्सा आता।

पता नहीं मेरा पढ़ाई में मन क्यों नहीं लगता! पढ़ाई जैसी चीज़ों में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। पर पढ़ाई तो करनी ही पड़ेगी। वर्ना बहुत महँगा पड़ जाएगा।

धन्यवाद,
शुभ रात्रि

मृगांक चमोली

सबसे अच्छा 'हल'

लोककथा

चित्रः अतनु राय

एक किसान ने लोहार से हल बनवाया। खेत की जुताई करने पर किसान ने पाया कि वह हल बहुत ही अच्छा है। कुछ समय बाद उसे अपने दोस्त के घर जाना था। किसान ने सोचा दोस्त को उपहार देने के लिए वह अपने हल से भी अच्छा हल बनवाएगा। किसान उसी लोहार के पास गया और बोला, "तुमने मेरे लिए जो हल बनाया है वह बहुत ही अच्छा है। मुझे उससे भी अच्छा एक हल बनाकर दो। मुझे अपने दोस्त को उपहार में देना है।"

लोहार बोला, "वह तो तुम्हें किसी और से बनवाना होगा।"

"किसी और से क्यों! तुमने मेरे लिए जो हल बनाया, वह कितना अच्छा था।" किसान बोला।

लोहार मुस्कराया, "मैंने बहुत मेहनत से उसे बनाया है। उससे अच्छा हल मैं तभी बना सकता था जब उसे बनाने में कोई कसर छोड़ी हो। इसीलिए कह रहा हूँ ऐसा हल तो तुम्हें किसी और से ही बनवाना पड़ेगा!"

बिल्ली की डायरी

चन्दन यादव
चित्रः वसुन्धरा अरोरा

मुझे वो घर बिलकुल अच्छे नहीं लगते जहाँ कुत्ते रहते हैं। उनके दरवाज़े पर जाने क्यों 'कुत्ते से सावधान' लिखा रहता है। जैसे लिखा न हो तो बिल्ली उनसे हाथ मिलाने पहुँच जाएँगी?

कुत्ते बेवजह चिल्लाते रहते हैं। कोई दूसरा ऐसे घर में जाए तो आफत ही है। वे पहले उस पर भौंकेंगे, फिर चाटने लगेंगे। कोई-कोई तो उन पर चढ़ ही जाएगा। उनकी पूँछ क्या कम टेढ़ी है जो उसे अजीब तरीके से हिलाते रहते हैं। कोई कुत्तों से प्यार कैसे कर सकता है!

मेरे दोस्त शिकायत करते हैं कि मैं कम दिखती हूँ। जब सारे मकान और गलियाँ कुत्तों से भरी हों तो कम न दिखें तो क्या करें!

मोमबत्ती लिए बूढ़ी औरत और लड़का

उजाले की नानी सूरज की माँ

अशोक भौमिक

हमें सूरज से रोशनी मिलती है। बल्ब, लालटेन, मोमबत्तियों से भी रोशनी मिलती है। जलती हुई मोमबत्ती की रोशनी मोमबत्ती से दूर जाते हुए हलकी होती जाती है। यह जो चित्र तुम देख रहे हो उसका नाम है – मोमबत्ती लिए बूढ़ी औरत और लड़का।

आज से चार सौ साल पहले पीटर पॉल रुबेंस नाम के एक महान चित्रकार हुए थे। देखने के लिए हमें रोशनी की ज़रूरत पड़ती है। इस चित्र में भी मोमबत्ती की रोशनी जहाँ-जहाँ जा रही है वह हिस्सा दिख रहा है। मोमबत्ती की रोशनी हथेलियों की आड़ की वजह से रुक रही है। जिस तरफ रोशनी नहीं जा सकी वहाँ अँधेरा है। इन दोनों के चेहरे देखो। और रंग देखो। और उजाला देखो।

आद्या श्रीमाली, आठ साल, मुम्बई
चित्रः अतनु राय

एक तोता था। उसे रात में सोते-सोते उड़ने की बीमारी थी। वह रोज़ रात में उड़ता और घूम-फिर कर वापस आ जाता था। एक रात वो दूर चला गया। सुबह उसकी नींद खुली। सपने में उसने मक्के के खेत देखे थे। सुबह वो सचमुच में एक मक्के के खेत में था। उसने पेट भर के मक्का खाया, और फिर घर जाने का सोचा। पर उसको घर का रास्ता याद ही नहीं था। वो उदास होकर बैठ गया। तभी एक छोटी काली चिड़िया आई और बोली, “अरे, यहाँ इतना सारा खाना है। सब मज़े से खा रहे हैं। और तुम उदास हो। भला क्यों?”

“मुझे अपने घर और दोस्तों की याद आ रही है। पर मुझे घर का रास्ता नहीं पता।”

“मैं तो किसी ऐसी चिड़िया को नहीं जानती जो अपना रास्ता भूले।”

“पर क्या तुम किसी ऐसी चिड़िया को जानती हो, जो सोते में उड़ती हो?”

“तो क्यों नहीं तुम रात तक यहाँ घूमो और रात में सोते-सोते उड़ जाओ।”

तोते को यह आइडिया जम गया। उसने पानी पिया, थोड़ा और मक्का खाया, पेड़ में कुछ सुस्ताया, कौवे से दौड़ लगाई। मैना और बुलबुल से गप्प लगाई। शाम को काली चिड़िया के साथ एक बड़े पेड़ पर सो गया। जानते हो वह सुबह कहाँ उठा? मुझे भी नहीं पता। शायद उस काली चिड़िया को पता होगा।

गमले में जंगल

जंगल के बीच ट्रेन खड़ी थी

टके थे दस

कुएँ में बिल्ली

अम्मा

पानी उतरा टीन पर

ये छह छोटी किताबें हैं। इतनी छोटी कि छिपाना चाहो तो जेबों में छिप जाएँ। और हथेलियों में लेकर पढ़ो तो लगे कि हथेलियाँ ही पढ़ रहे हैं। पर दिखने में तो तारे भी छोटे ही दिखते हैं। कोई तारों के पास जाकर देखे।

ऐसी ही इन छोटी किताबों की कविताएँ हैं। पढ़ने लगो तो जंगल, नदिया, चाँद, तारे, बादल, धरती और सागर सब है इनमें-

रात के भुटटे में
तारों के दाने
चाँद की चिड़िया
चुगकर ही माने

इन्हें प्लूटो के पते पर लिखकर या
www.ektaraindia.in/ektarashop से मँगा सकते हैं।

पकड़ा बाघ कहानी में

प्रभात
चित्रः प्रोइति रॉय

बादल आँधी पानी में
ये क्या ठानी नानी ने
घाटी की वीरानी में
पकड़ा बाघ कहानी में

बिना बात बन तुर्रम खां
घर से निकली खामखां
कान पकड़कर बाघ का
फिरा दिया है घुमा-घुमा

बदल गया जो बाघ अगर
आ न सकेगी वापस घर
डर लगता है सुनकर ही
नानी ने तो हद कर दी
बादल आँधी पानी में
पकड़ा बाघ कहानी में

दरअसल कल
रात घर के सारे
बरतन-चोरी
चले गए

इकतारा द्वारा विकसित

दुमाही बाल पत्रिका

अवधि	अंक	सदस्यता दर (पंजीकृत डाक शुल्क सहित)
एक साल	6	₹ 425
दो साल	12	₹ 850
तीन साल	18	₹ 1275

एक प्रति - ₹ 60 (डाक खर्च अतिरिक्त)
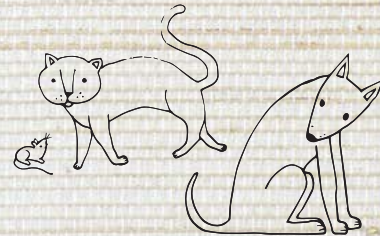
सम्पादन - सुशील शुक्ल, शशि सबलोक
उपसम्पादक - चन्दन यादव, निधि गौड़
डिज़ाइन - प्रोइति रॉय
आवरण चित्र - तापोशी घोषाल
वितरण - राजेन्द्र परमार, अनीता शर्मा

मुद्रक तथा प्रकाशक संजीव कुमार द्वारा तक्षशिला पब्लिकेशन–तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी की इकाई के लिए मल्टी कलर सर्विसेज़, शेड नं. 92, डी.एस.आई.डी.सी., ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020 से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित, सम्पादक - सुशील शुक्ल

भुगतान विवरण - बैंक ड्राफ्ट/चेक इकतारा ट्रस्ट के नाम नई दिल्ली में देय। ऑनलाइन ट्रांसफर आई.सी.आई.सी.आई. बैंक, बी-78 डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली, खाता नम्बर 630001028225, IFSC Code - ICIC0006300 में भेजें।

ऑनलाइन खरीद की लिंक
www.ektaraindia.in/ektarashop

भुगतान और वितरण की पूरी जानकारी
publication@ektaraindia.in पर दें।

इकतारा–तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केन्द्र
ई-1/212, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462016
फोन - 0755-4939472
9109915118 9630097118
ई-मेल - pluto@ektaraindia.in
वेबसाइट - www.ektaraindia.in

गुब्बारे से गिलास उठाओ

क्या एक फूले हुए गुब्बारे से काँच का गिलास उठा सकते हैं?
कोशिश करते हैं...

1
एक गुब्बारा फुला लें। काँच का गिलास भी टेबल पर रखें। गिलास में एक जलती हुई तीली डाल दें।
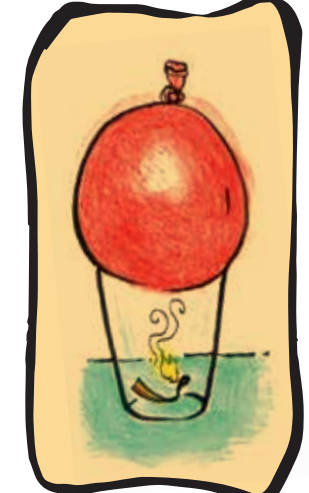
2
तीली बुझ जाए तब गुब्बारे को गिलास पर रखकर दबाएँ।
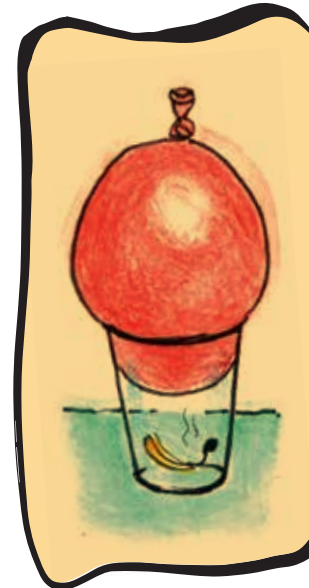
3
इससे गुब्बारा गिलास के अन्दर की तरफ थोड़ा फूल जाएगा।
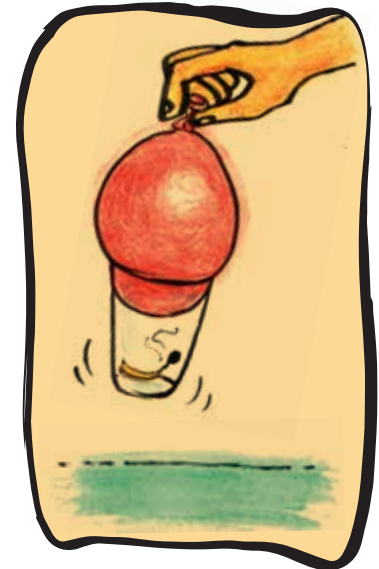
4
अब गुब्बारे को पकड़कर उठाएँ। साथ में गिलास भी उठ जाएगा।